OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

M.A. Hindi Course Outcome

एम.ए. हिन्दी
निर्धारित पाठ्यक्रम
समसत्र (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ)
(C.B.C.S.)

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्न-पत्र 01: प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास

आदिकालीन कवियों एवं उनकी रचनाओं से छात्र/ छात्राओं को तत्कालीन राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं रूढ़ीवादी परंपराओं की जानकारी प्रदान कराना। इसके साथ देशकाल वातावरण एवं परिस्थितियों की जानकारी से अवगत कराना।

प्रश्न-पत्र 02 :- आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास- (1850 से आज तक)

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं नवजागरण से छात्र/ छात्राओं का परिचय कराना, साथ ही हिंदी साहित्य की नवीन विधाओं जैसे नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी आदि के माध्यम से साहित्य के बदलते स्वरूप से रूबरू कराना। स्वाधीनता आंदोलन के समय देश की राजनैतिक स्थितियों की तथ्यात्मक जानकारी प्रदान कराना।

प्रश्न-पत्र 03:- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र -

भारतीय काव्यशास्त्र के माध्यम से काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु एवं काव्य के स्वरूप से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना एवं भारतीय साहित्य की उत्कर्ष की जानकारी देना; जिससे छात्र छात्राएं आधुनिक एवं प्राचीन साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन कर सकें साथ ही प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार हो सके।

प्रश्न-पत्र 04 :- •प्रयोजनमूलक हिन्दी-

प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से परिनिष्ठित भाषा, आदर्श भाषा का ज्ञान प्राप्त कराना; जिससे व्यावहारिक रूप एवं लेखन में प्रयुक्त किया जा सके। कार्यालय भाषा का ज्ञान वर्तमान समय की मांग है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पत्राचार, लेखन, टंकण आदि का ज्ञान प्राप्त कर आजीविका चलाने में सहायता प्राप्त होती है।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्न-पत्र 01: प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास

आदिकालीन कवियों एवं उनकी रचनाओं से छात्र/ छात्राओं को तत्कालीन राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं रूढ़ीवादी परंपराओं की जानकारी प्रदान कराना। इसके साथ देशकाल वातावरण एवं परिस्थितियों की जानकारी से अवगत कराना।

प्रश्न-पत्र 02 :- आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास- (1850 से आज तक)

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं नवजागरण से छात्र/ छात्राओं का परिचय कराना, साथ ही हिंदी साहित्य की नवीन विधाओं जैसे नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी आदि के माध्यम से साहित्य के बदलते स्वरूप से रूबरू कराना। स्वाधीनता आंदोलन के समय देश की राजनैतिक स्थितियों की तथ्यात्मक जानकारी प्रदान कराना।

प्रश्न-पत्र 03:- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र -

भारतीय काव्यशास्त्र के माध्यम से काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु एवं काव्य के स्वरूप से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना एवं भारतीय साहित्य की उत्कर्ष की जानकारी देना; जिससे छात्र छात्राएं आधुनिक एवं प्राचीन साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन कर सकें साथ ही प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार हो सके।

प्रश्न-पत्र 04 :- •प्रयोजनमूलक हिन्दी-

प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से परिनिष्ठित भाषा, आदर्श भाषा का ज्ञान प्राप्त कराना; जिससे व्यावहारिक रूप एवं लेखन में प्रयुक्त किया जा सके। कार्यालय भाषा का ज्ञान वर्तमान समय की मांग है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पत्राचार, लेखन, टंकण आदि का ज्ञान प्राप्त कर आजीविका चलाने में सहायता प्राप्त होती है।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न-पत्र 01 :- आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास-

आधुनिक युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं स्थिति से छात्र-छात्राएं ज्ञानार्जन करते हैं, साथ ही इस युग के कवियों को कविताओं से भारत की आदर्श एवं यथार्थ स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। तत्कालीन कविताओं से समाज एवं देशकाल वातावरण से छात्र-छात्राएं अवगत होते हैं और छात्र-छात्राओं की सोच में सकारात्मक विकास होता है।

प्रश्न-पत्र 02 :- भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा-

भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा से छात्राओं के हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त होता है। हिंदी भाषा के उद्भव एवं उसके विकास की जानकारी प्राप्त होती है। भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप से छात्र-छात्राएं परिचित होते हैं। देश में हिंदी की संवैधानिक स्थिति से छात्र परिचित होते हैं।

प्रश्न-पत्र 03 :- हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रश्न-पत्र –

हिंदी साहित्य का इतिहास पढ़ने से छात्र-छात्राओं में अलोचनात्मक एवं समालोचनात्मक चिंतन का विकास होता है; जिसमें काल्पनिक कल्पना शक्ति की दक्षता के साथ-साथ रचनात्मक विकास भी संभव है।

04 :- वैकल्पिक प्रश्न-पत्र (प्रेमचंद, सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका साहित्य)-

प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार हैं; जिनकी रचनाओं के स्पर्श से कोई भी अधूरा अछूता नहीं है। नई-पुरानी पीढ़ियों ने उनकी कहानियां पढ़ कर अपनी साहित्यिक समझ विकसित किया है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में आर्थिक असमानता मनुष्य के भीतर बेईमानी, झूठ फरेब, अभियोग, झूठे आरोप, वेश्यावृति जैसी कुरीतियों का चित्रण देखने को मिलता है; जिससे मनुष्य के मानस पटल में सामाजिक बुराइयों का प्रतिबिंब चित्रित होता है और उन जटिलताओं से निकलने की युक्ति भी मिलती है।

OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्न-पत्र 01 :- आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास-

आधुनिक युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं स्थिति से छात्र-छात्राएं ज्ञानार्जन करते हैं, साथ ही इस युग के कवियों को कविताओं से भारत की आदर्श एवं यथार्थ स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। तत्कालीन कविताओं से समाज एवं देशकाल वातावरण से छात्र-छात्राएं अवगत होते हैं और छात्र-छात्राओं की सोच में सकारात्मक विकास होता है।

प्रश्न-पत्र 02 :- भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा-

भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा से छात्राओं के हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त होता है। हिंदी भाषा के उद्भव एवं उसके विकास की जानकारी प्राप्त होती है। भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप से छात्र-छात्राएं परिचित होते हैं। देश में हिंदी की संवैधानिक स्थिति से छात्र परिचित होते हैं।

प्रश्न-पत्र 03 :- हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रश्न-पत्र –

हिंदी साहित्य का इतिहास पढ़ने से छात्र-छात्राओं में अलोचनात्मक एवं समालोचनात्मक चिंतन का विकास होता है; जिसमें काल्पनिक कल्पना शक्ति की दक्षता के साथ-साथ रचनात्मक विकास भी संभव है।

04 :- वैकल्पिक प्रश्न-पत्र (प्रेमचंद, सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका साहित्य)-

प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार हैं; जिनकी रचनाओं के स्पर्श से कोई भी अधूरा अछूता नहीं है। नई-पुरानी पीढ़ियों ने उनकी कहानियां पढ़ कर अपनी साहित्यिक समझ विकसित किया है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में आर्थिक असमानता मनुष्य के भीतर बेईमानी, झूठ फरेब, अभियोग, झूठे आरोप, वेश्यावृति जैसी कुरीतियों का चित्रण देखने को मिलता है; जिससे मनुष्य के मानस पटल में सामाजिक बुराइयों का प्रतिबिंब चित्रित होता है और उन जटिलताओं से निकलने की युक्ति भी मिलती है।